नईदुनिया

अमेरिका के पूर्वोत्तर में तूफान से जनजीवन प्रभावित, सैकड़ों उड़ानें रद्द

न्यूयार्क

अमेरिका के पूर्वोत्तर हिस्से में तेज हवाओं और भारी बारिश के साथ आए शक्तिशाली नारईस्टर तूफान ने जनजीवन को प्रभावित किया है। तूफान के कारण सैकड़ों उड़ानें रद्द करनी पड़ीं, जबकि न्यूयार्क, न्यू जर्सी, कनेक्टिकट और मैसाचुसेट्स में 75 हजार से अधिक बिजली उपभोक्ताओं की आपूर्ति बाधित हो गई।

न्यूयार्क, बोस्टन और फिलाडेल्फिया समेत कई शहरों और आसपास के इलाकों में खराब मौसम का असर देखा जा रहा है। मौसम अधिकारियों ने तटीय क्षेत्रों में बाढ़ आने और निचले इलाकों की सड़कों पर पानी भरने की आशंका जताई है। राष्ट्रीय मौसम सेवा के अनुसार, सप्ताहांत में समुद्र में ज्वार के कई चक्रों के दौरान मिड-अटलांटिक तट पर गंभीर बाढ़ आ सकती है।

न्यूयार्क की गवर्नर कैथी होकुल ने बताया कि तूफान न्यूयार्क सिटी के तटीय इलाकों और लान्ग आइलैंड की ओर बढ़ रहा है। लान्ग आइलैंड में अगले कुछ दिनों के दौरान करीब 15 सेंटीमीटर बारिश होने का अनुमान है। कुछ तटीय क्षेत्रों में छह मीटर तक ऊंची लहरें उठ सकती हैं।

न्यूयार्क के मेयर जोहरान ममदानी ने लोगों को तेज हवाओं और बिजली के तार गिरने के खतरे को देखते हुए अनावश्यक यात्रा से बचने की सलाह दी है।

सैकड़ों उड़ानें रद्द - तूफान के चलते सैकड़ों उड़ानें प्रभावित हुईं। फ्लाइट ट्रैकर फ्लाइटअवेयर के अनुसार, अकेले बोस्टन के लोगान हवाई अड्डे पर करीब 130 उड़ानें रद्द की गईं। जेटब्लू, यूनाइटेड और अमेरिकन एयरलाइंस समेत कई प्रमुख विमानन कंपनियों ने यात्रियों को यात्रा में बदलाव की सुविधा देने के लिए अलर्ट जारी किए हैं।

संयुक्त राष्ट्र ने भी न्यूयार्क मुख्यालय में महासभा की कवरेज कर रहे मीडिया संस्थानों से तेज हवाओं के मद्देनजर बाहर लगाए गए प्रसारण उपकरण हटाने को कहा।

कई बड़े आयोजन रद्द - खराब मौसम का असर क्षेत्र के सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर भी पड़ा। न्यूयार्क में ग्लोबल सिटीजन और आल थिंग्स गो संगीत समारोह रद्द कर दिए गए, जबकि मैरीलैंड में ओशन्स कालिंग कार्यक्रम भी नहीं हो सका।

ग्लोबल सिटीजन के आयोजकों ने कहा कि सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए कार्यक्रम रद्द करने का फैसला किया गया। यह 14 वर्षों में पहली बार था जब उन्हें कार्यक्रम रद्द करना पड़ा।

मैसाचुसेट्स के कुछ इलाकों में करीब 13 सेंटीमीटर बारिश का अनुमान था। यह मात्रा एक महीने से अधिक की सामान्य बारिश के बराबर बताई गई। खराब मौसम के कारण ब्रिटिश पाप गायक एड शीरन के बोस्टन के पास सप्ताहांत में होने वाले संगीत कार्यक्रम भी रद्द कर दिए गए। न्यू इंग्लैंड के तट पर हवाओं की रफ्तार 105 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंचने की आशंका जताई गई थी।

न्यूज ब्रीफ

वैश्विक एकजुटता और मजबूत तैयारियों से ही महामारियों के खतरों से निपटा जा सकता है: एंटोनियो गुटेरेस

न्यूयार्क। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने महामारियों को रोकने, उनसे निपटने की तैयारी करने और उनके खिलाफ ठोस कदम उठाने के लिए पूरी दुनिया से मिलकर काम करने की वकालत की है। उन्होंने साफ किया कि कोई भी देश सिर्फ अपने दम पर खुद को भविष्य की महामारियों से पूरी तरह सुरक्षित नहीं रख सकता। महामारियों से निपटने के विषय पर आयोजित उच्चस्तरीय बैठक में उनका यह संदेश संयुक्त राष्ट्र की उप महासचिव अमीना मोहम्मद द्वारा पढ़ा गया। गुटेरेस ने कहा कि कोविड-19 महामारी ने दुनिया को कड़वा सबक सिखाया है कि आपस में गहराई से जुड़ी इस वैश्विक व्यवस्था में सुरक्षा के लिए सामूहिक प्रयास अनिवार्य हैं। भविष्य की किसी भी स्वास्थ्य आपदा से निपटने के लिए लंबी अवधि की मजबूत तैयारियों को आवश्यक बताकर उन्होंने कहा कि यह रूपरेखा सभी के लिए बराबरी, आपसी सहयोग और प्रभावी साझेदारी पर आधारित होनी चाहिए। इसके अलावा, विज्ञान के अधिकाधिक उपयोग, लोकल समुदायों की सक्रिय भागीदारी और अग्रिम पंक्ति के स्वास्थ्य कर्मियों के योगदान को बढ़ाने पर विशेष जोर दिया। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव गुटेरेस ने वैश्विक स्तर पर फंडिंग की भारी कमी को दूर करने की आवश्यकता पर जोर देकर सरकारों से अपील की कि वे अपने वादों को पूरा करें और लोगों की जान बचाने के लिए निरंतर संसाधन उपलब्ध कराएं। उन्होंने वन हेल्थ यानी एक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण को अपनाने की बात कही, जिसके तहत इंसानों की सेहत को पर्यावरण और जानवरों के स्वास्थ्य से जोड़ा गया है ताकि प्रकोप को इंसानों तक पहुंचने से पहले ही रोका जा सके।

मगरमच्छों के पाचन तंत्र में पत्थरों की होती है खास भूमिका: विशेषज्ञ

वाशिंगटन। क्या आप जानते हैं कि मगरमच्छ छोटे-छोटे पत्थर भी निगलता है मगरमच्छों के पाचन तंत्र में इन पत्थरों की खास भूमिका बताई जाती है। इन्हें गैस्ट्रोलिथ कहा जाता है। ये पत्थर मगरमच्छ के पेट में रहकर भोजन को छोटे हिस्सों में तोड़ने में मदद कर सकते हैं। मगरमच्छ अपने शिकार को इंसानों की तरह चबाकर नहीं खाता। कई बार वह मांस और दूसरे ऊतकों को बड़े टुकड़ों में ही निगल जाता है। शिकार के साथ हड्डियां और अन्य कठोर हिस्से भी उसके पेट में पहुंच सकते हैं। ऐसे में पेट में मौजूद गैस्ट्रोलिथ भोजन को यांत्रिक रूप से पीसने में मदद करते हैं। इसे प्राकृतिक ग्राइंडर की तरह समझा जा सकता है, जो भोजन के बड़े टुकड़ों को छोटे हिस्सों में बदलने में योगदान देता है। इसके साथ ही मगरमच्छ के पेट में मौजूद मजबूत गैस्ट्रिक अम्ल भी पाचन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भोजन को रासायनिक रूप से तोड़ने में मदद करता है। जब शिकार के साथ हड्डियां या अन्य कठोर पदार्थ पेट में पहुंचते हैं, तो गैस्ट्रिक अम्ल उनके टूटने और पाचन की प्रक्रिया में योगदान दे सकता है। इस तरह गैस्ट्रोलिथ और पेट का अम्ल अलग-अलग तरीकों से पाचन में मदद करते हैं।

100 साल बाद वैज्ञानिकों ने पहचानी जंगली बिल्ली की नई प्रजाति

न्यूयार्क। बोलीविया के वैज्ञानिकों ने जंगली बिल्ली की एक ऐसी प्रजाति की पहचान की है, जिसे विज्ञान ने अब

तक अलग प्रजाति के रूप में दर्ज नहीं किया था। बादलों से ढके युंगास के पहाड़ी जंगलों में करीब 46 सेंटीमीटर लंबी और लगभग 1.4 किलोग्राम वजन वाली यह बिल्ली आकार में सामान्य घरेलू बिल्ली से भी छोटी है। वैज्ञानिकों ने इसका नाम लेपर्डस तिलकायो रखा है। स्थानीय स्तर पर इसे तिलकायो नाम से जाना जाता है। खास बात यह है कि इस प्रजाति का एक नर बिल्ली कुछ समय तक स्थानीय परिवार के घर में पाला भी जा रहा था। शोधकर्ताओं के मुताबिक, तिलकायो दक्षिण अमेरिका में पाए जाने वाले टाइगर कैट समूह का हिस्सा है। वैज्ञानिक रूप से किसी जीवित नई बिल्ली प्रजाति की औपचारिक पहचान लंबे समय बाद हुई है। इस बिल्ली का शरीर हल्के भूरे रंग का है और उस पर अनियमित आकार की रोसेट जैसी धारियां दिखाई देती हैं। इसके छोटे आकार के बावजूद इसकी आनुवंशिक पहचान ने वैज्ञानिकों का ध्यान खींचा। इस खोज में 10 साल के एक नर तिलकायो की भूमिका खास रही। वह पहले एक स्थानीय परिवार के घर में रहता था। बाद में उसे सेंदा वर्दे वन्यजीव अभयारण्य में स्थानांतरित कर दिया गया। शोधकर्ताओं को उसकी शारीरिक बनावट मौजूदा टाइगर कैट प्रजातियों से अलग लगी।

जम्मू में बन रहा देश का तीसरा मरीन एक्वेरियम

अब समुद्र की 400 मछलियों की दुर्लभ प्रजातियां पहाड़ों में दिखेंगी

जम्मू से डॉ. शिशिर उपाध्याय की रिपोर्ट

देश में तीसरा, राज्य में पहला

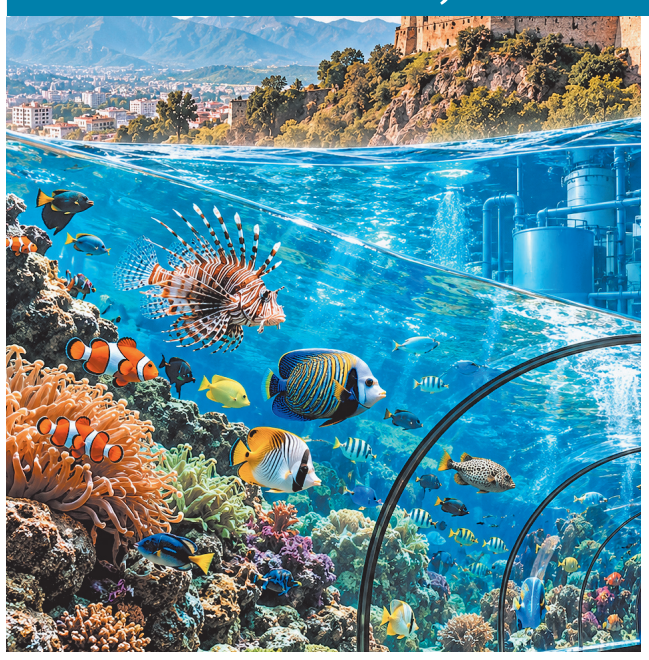

जम्मू के बहू किले में स्थित एक्वेरियम अब राष्ट्रीय स्तर का आकर्षण बनने जा रहा है। यहां उत्तर भारत का पहला और देश का तीसरा मरीन एक्वेरियम बनाया जा रहा है। इसका निर्माण अंतिम चरण में है और नवंबर माह में इसे आम जनता के लिए खोल दिया जाएगा। इस परियोजना के शुरू होने के बाद जम्मू-कश्मीर मत्स्य पर्यटन के मानचित्र पर बड़ी मजबूती से उभरेगा। मत्स्य पालन विभाग के संयुक्त निदेशक मसूद हुसैन ने कहा कि यह सिर्फ एक मछलीघर नहीं, बल्कि समुद्री विज्ञान की जीवंत प्रयोगशाला होगी। यहां 400 से अधिक खारे पानी की सजावटी और दुर्लभ प्रजातियों की मछलियों को रखा जाएगा। इनमें क्लाउन फिश, लायन फिश, एंजेल फिश, बटरफ्लाई फिश और कई प्रकार की कोरल रीफ मछलियां शामिल होंगी। बच्चों से लेकर शोध छात्रों तक सभी के लिए यह आकर्षण और ज्ञान का केंद्र बनेगा।

गौरतलब है कि अभी तक देश में सिर्फ दो ही मरीन एक्वेरियम हैं। एक मुंबई और दूसरा तमिलनाडु में है। जम्मू का मरीन एक्वेरियम देश का तीसरा होगा और पहाड़ी राज्य में पहला होने से इसकी महत्ता और बढ़ जाती है। यहां आने वाले पर्यटक एक ही दिन में इतिहास, बहू किला और समुद्र, दोनों का अनुभव ले सकेंगे। यह परियोजना केंद्र सरकार की उस सोच को दर्शाती है, जिसके तहत जम्मू-कश्मीर को हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर और पर्यटन हब बनाया जा रहा है। मीडिया दल ने इसे जम्मू के लिए ब्लू रिवोल्यूशन की शुरुआत बताया।

रोजगार और पर्यटन को मिलेगा बूस्ट

संयुक्त निदेशक ने बताया कि जम्मू-कश्मीर में मत्स्य पालन अब सहायक नहीं, बल्कि मुख्य रोजगार बन गया है। सरकार ने 28,000 मीट्रिक टन ट्राउट उत्पादन का लक्ष्य रखा है। साथ ही कमर्शियल ट्राउट फार्मिंग और एंगलिंग टूरिज्म से सालाना 10 करोड़ रुपये की आय का लक्ष्य तय किया गया है। इस मरीन एक्वेरियम के बनने से बहू किले में पर्यटकों की संख्या दोगुनी होने की उम्मीद है। स्थानीय युवाओं को गाइड, टिकटिंग, रखरखाव और फिश फीडिंग जैसे कार्यों में रोजगार मिलेगा।

तकनीक में विश्वस्तरीय

इस मरीन विंग को बनाने में अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। पहली विशेषता है 50 एमएम मोटा ऐक्रेलिक ग्लास, जिसमें 98 प्रतिशत पारदर्शिता है। इससे देखने पर ऐसा लगेगा जैसे दर्शक समुद्र के अंदर खड़ा है और मछलियां उसके चारों ओर तैर रही हैं। दूसरी विशेषता है 4 लाख लीटर क्षमता वाला मरीन वाटर सिस्टम, जो 24 घंटे समुद्री पानी को फिल्टर और तापमान नियंत्रित रखेगा। तीसरी सबसे अहम बात है 18,000 किलोग्राम विशेष समुद्री नमक। इसी नमक से कृत्रिम समुद्री पानी तैयार किया जाएगा, ताकि समुद्री इकोसिस्टम जम्मू में भी प्राकृतिक रूप से जीवित रह सके। पूरे सिस्टम को ऑटोमेटिक सेंसर और ऑक्सीजन कंट्रोल से जोड़ा गया है।

जयशंकर ने न्यूयार्क में कनाडा मैक्सिको और वेनेजुएला के विदेशमंत्रियों से मुलाकात की

न्यूयार्क

भारतीय विदेशमंत्री एस. जयशंकर ने 81वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) के दौरान कनाडा, मैक्सिको और वेनेजुएला के अपने समकक्षों के साथ अलग-अलग मुलाकात कर बैठक की। जयशंकर ने एक्स पोस्ट में यह जानकारी सचित्र साझा की।

भारत के विदेशमंत्री जयशंकर ने कहा कि उन्होंने कनाडा की विदेशमंत्री अनीता आनंद से मुलाकात की और उनसे सार्थक चर्चा की। दोनों पक्ष अपने संबंधों को एक ऊंचे स्तर पर ले जाने की तैयार हैं। जयशंकर ने मैक्सिको के विदेशमंत्री राबर्टो वेलास्को अल्वारेज़ के साथ अपनी बैठक की जानकारी भी साझा की।

उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में वेनेजुएला के विदेशमंत्री फेलिक्स प्लासेंसिया गोंजालेज के साथ उनकी अच्छी बैठक हुई। दोनों देशों के बीच ऊर्जा संबंध तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। जयशंकर ने कहा कि द्विपक्षीय सहयोग के अन्य क्षेत्रों के अलावा, हमारे ऊर्जा संबंध भी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। हमने मौजूदा क्षेत्रीय मुद्दों पर भी चर्चा की।

जयशंकर ने इससे पहले 81वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि भारत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को ग्लोबल साउथ के साथ अपनी साझेदारी एजेंडे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानता है।

एआई मानव सशक्तिकरण, आर्थिक समृद्धि और आबादी से जुड़ी समस्याओं को हल करने के लिए एक परिवर्तनकारी कारक है। उन्होंने तकनीक के लोकतंत्रीकरण और सांस्कृतिक समझ की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

पाल-बेलारूस के बीच राजनयिक और सरकारी पासपोर्ट धारकों को वीजा छूट का समझौता

काठमांडू। नेपाल और बेलारूस के बीच राजनयिक, सरकारी तथा सेवा पासपोर्ट धारकों को वीजा छूट देने संबंधी समझौते पर हस्ताक्षर हुए हैं। नेपाल के विदेश मंत्रालय के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र महासभा के 81वें सत्र के अवसर पर न्यूयार्क में आयोजित एक साइडलाइन कार्यक्रम में नेपाल के विदेश मंत्री शिशिर खनाल और बेलारूस के विदेश मंत्री मैक्सिम रिजेनकोव ने दोनों सरकारों की ओर से समझौते पर हस्ताक्षर किए। समझौते पर हस्ताक्षर से पहले दोनों विदेश मंत्रियों के बीच सौहार्दपूर्ण मुलाकात हुई। इस दौरान दोनों देशों के आपसी हित से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई।

जिनपिंग की अमेरिका यात्रा बिना किसी बड़ी व्यापार डील और एआई के समाप्त

ट्रंप ने शी को ईरान को किसी भी तरह की मदद न देने की दी सख्त चेतावनी

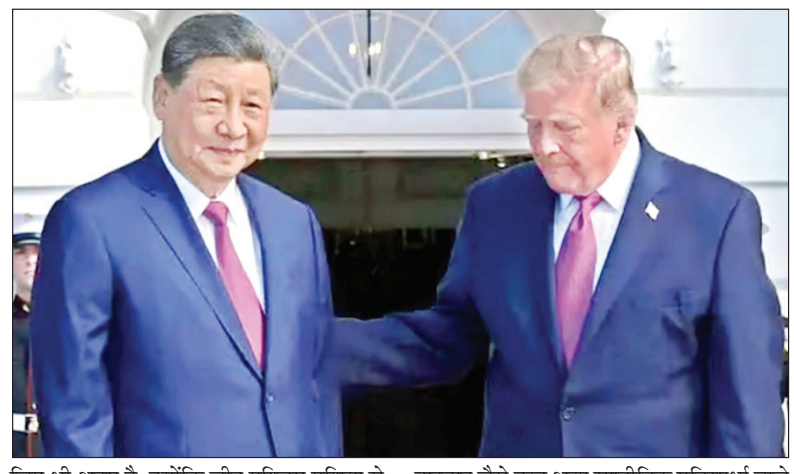

वाशिंगटन

चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अपनी तीन दिवसीय अमेरिका यात्रा पूरी कर ली और वाशिंगटन से चीन के लिए रवाना हो गए। इस यात्रा में उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ व्यापार, ईरान, यूक्रेन, ताइवान और एआई जैसे कई मुद्दों पर चर्चा की। हालांकि, यात्रा का समापन बिना किसी बड़ी नई व्यापार डील या एआई पर ठोस समझौते के हुआ, जबकि ट्रंप ने ईरान को लेकर चीन को सीधी चेतावनी दी। ट्रंप ने इस यात्रा में शी जिनपिंग को ईरान को सीधे या परोक्ष रूप से किसी भी तरह की मदद न देने की सख्त चेतावनी दी।

मीडिया रिपोर्ट में अमेरिका के चीन में राजदूत डेविड पर्ड्यू के मुताबिक ट्रंप ने स्पष्ट रूप से कहा कि ईरान को ऐसी मदद देना अमेरिका को स्वीकार्य नहीं होगा। चीन की ओर से अमेरिका को यह भरोसा दिलाया कि वह ईरान को ऐसी मदद नहीं देगा। यह चेतावनी ऐसे समय में आई है जब अमेरिका में ऐसी रिपोर्टें सामने आई हैं कि चीन से ईरान को हथियार और सैन्य मदद मिल सकती है, साथ ही ईरान पर लगे प्रतिबंधों से बचने के लिए चीन के जरिए तेल बेचने की कोशिशों की भी खबरें हैं। ईरान का मुद्दा होर्मुज संकट के कारण चीन के लिए भी अहम है, क्योंकि चीन पश्चिम एशिया से बड़े पैमाने पर तेल खरीदता है और होर्मुज से तेल की आवाजाही प्रभावित होने का सीधा असर उसकी अर्थव्यवस्था पर पड़ता है।

शीदोनों देशों ने पहले से चल रहे व्यापार युद्धविराम को आगे बढ़ाने पर सहमति जताई, जो एक राहत भरी खबर थी, खासकर अमेरिकी किसानों के लिए। शी जिनपिंग ने कहा कि अमेरिका और चीन की जिम्मेदारी है कि एआई का विकास इंसानों के नियंत्रण में रहे, लेकिन ट्रंप और जिनपिंग की इस बैठक में एआई की होड़ को रोकने या दोनों देशों के बीच कोई बड़ी नई व्यवस्था बनाने की घोषणा नहीं हुई। यूक्रेन और ताइवान जैसे कुछ अन्य रणनीतिक प्रतिस्पर्धा वाले मुद्दों पर मतभेद बने रहे और उनका पूरी तरह से समाधान नहीं हो सका।

रिपोर्ट के मुताबिक शी जिनपिंग के रवाना होते ही ट्रंप ने अपने ट्रुथ सोशल अकाउंट पर दोनों नेताओं और उनकी पत्नियों, मेलानिया ट्रंप और पेंग लियुआन की एक तस्वीर साझा की, जिस पर अमेरिका इज बेक लिखा था। तीन दिवसीय यात्रा में ट्रंप ने चीनी राष्ट्रपति का बहुत ही भव्य स्वागत किया गया। दोनों नेताओं ने व्हाइट हाउस और नेशनल आर्काइव्स का दौरा किया, जहां उन्होंने अमेरिका के ऐतिहासिक दस्तावेजों का अवलोकन किया और बाद में साथ में चाय भी पी।

रूस का यूएनएससी में भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन

न्यूयार्क

रूस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन किया। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि सुरक्षा परिषद में एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका का प्रतिनिधित्व बढ़ना चाहिए। हम ब्राजील और भारत की स्थायी सदस्यता की उम्मीदवारी का समर्थन करते हैं। लावरोव ने सुरक्षा परिषद में पश्चिमी देशों की अतिरिक्त सीटों का विरोध किया।

उन्होंने खासतौर पर जर्मनी और जापान का नाम लेते हुए उन पर सैन्यवाद और बदले की भावना की ओर बढ़ने का आरोप लगाया। लावरोव ने साथ ही कहा कि यूएनएससी में सुधार के दौरान मौजूदा स्थायी सदस्यों के अधिकारों और शक्तियों में कमी नहीं होनी चाहिए।

जर्मनी-जापान का विरोध किया, सुरक्षा परिषद में 5 परमानेंट मेंबर, भारत 8 बार अस्थायी सदस्य रहा

दुनिया की 17 प्रतिशत आबादी भारत में रहती है। 142 करोड़ जनसंख्या के साथ भारत दुनिया का सबसे ज्यादा आबादी वाला देश है। यूएनएससी में इतनी बड़ी आबादी का रिप्रेजेंटेशन होना जरूरी है। पिछले एक दशक में भारत की औसतन सालाना विकास दर 7 प्रतिशत से ज्यादा रही है। यह चीन के बाद किसी भी दूसरे बड़े देश की तुलना में सबसे ज्यादा है। इस आर्थिक ताकत को यूएनएससी में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। भारत परमाणु

शक्ति संपन्न है, लेकिन वो इसका दिखावा नहीं करता। अगर भारत को सुरक्षा परिषद में शामिल किया जाता है तो परमाणु निरस्त्रीकरण प्रोग्राम में वह अहम भूमिका निभा सकता है। इंटरनेशनल थिंक टैंक अटलांटिक काउंसिल के सर्वे के मुताबिक यदि अगले एक दशक में यूएनएससी का विस्तार होता है तो उसमें सबसे ज्यादा मौके भारत के लिए होंगे। एक्सपर्ट्स के बीच कराए गए सर्वे के अनुसार, भारत के स्थायी सदस्य बनने की संभावना 26 प्रतिशत रहेगी। भारत की स्थायी सदस्यता की मांग 1990 से जारी भारत की यूएनएससी में स्थायी सदस्यता की मांग 1990 के दशक से उठती रही है। 2008 से यूएन में सुरक्षा परिषद सुधार पर औपचारिक बातचीत शुरू हुई। 2010 में भारत ने ब्राजील, जर्मनी और जापान के साथ जी4 समूह बनाकर स्थायी सीट की मांग आगे बढ़ाई। 2026 में भी सुधार को लेकर बातचीत जारी है, लेकिन सदस्य देशों के बीच यूएनएससी के नए ढांचे पर सहमति नहीं बनी है। परिषद के सदस्य 15, वीटो राइट सिर्फ 5 को सुरक्षा परिषद में कुल 15 सदस्य हैं। इनमें 5 स्थायी सदस्य- अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन हैं। इन सबको वीटो पावर हासिल है। इसके अलावा 10 गैर-स्थायी सदस्य होते हैं, जिन्हें 2 साल के कार्यकाल के लिए चुना जाता है। सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य बढ़ाने के लिए यूएन चार्टर में बदलाव करना होगा। इसके लिए महासभा में दो-तिहाई बहुमत और दो-तिहाई सदस्य देशों की औपचारिक मंजूरी जरूरी है। इसमें सभी पांच मौजूदा स्थायी सदस्यों की मंजूरी भी आवश्यक है।